प्रथम अध्याय

असगर वजाहत : व्यक्ति एवं वाङ्मय

''असगर वजाहत : व्यक्ति एवं वाङ्मय''

1.1 व्यक्ति परिचय -

हर साहित्यकार के कृतित्व की मूल चेतना व्यक्ति सापेक्ष न होकर समाज-सापेक्ष होती है। फिर भी उसके कृतित्व में उसका व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभव की अहं भूमिका होती ही है। इसलिए किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय आवश्यक हो जाता है। डॉ. नेमिचंद्र जैन का कथन दृष्टव्य है- ''श्रेष्ठ साहित्य साहित्यकार की सच्ची अनुभूति की उपज है। जिस सत्य के साथ लेखक ने स्वयं पूरी तीव्रता के साथ साक्षात्कार नहीं किया, उसे लेकर मार्मिक और सार्थक साहित्य की रचना उसके लिए संभव नहीं है।''[1] कहना जरूरी नहीं कि मार्मिक और सार्थक साहित्य के निर्माण के लिए लेखक की भावनाओं और संवेदनाओं ने सत्य के साथ स्वयं साक्षात्कार किया हो। साहित्यकार और समाज एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। जिस साहित्यकार की रचना की जड़ें समाज में गहरी समाई होती हैं वही सच्चा लेखक होता है। श्रेष्ठ लेखक के बारे में पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार अहमद बशीर ने कहा है कि ''सच्चा लेखक दिल की जमीन में दर्द गूँधता है। कागज को अपने भीतर के भेद को बताता है तो पढ़नेवालों के जेहन में रोशनी के फूल खिल उठते हैं और जीवन में जागृति की खुशबू फैल जाती है। लेखक समाज का एक अहम फर्द होता है क्योंकि वह गुजरे हुए कल, गुजरते हुए आज और आनेवाली सुबह की कहानियाँ लिखता है ताकि पिछली पीढ़ी का तजुर्बा जाया न हो, और आनेवाली पीढ़ी उससे कुछ सीख सके।''[2] अतः कहना आवश्यक नहीं कि लेखक को भविष्य का दृष्टा होने के साथ-साथ इतिहास को भी नहीं भूलना चाहिए।

असगर वजाहत जैसे बहुआयामी एवं रचनाधर्मी साहित्यकार के व्यक्तित्व का सही आकलन उनके कृतित्व को समझने के लिए आवश्यक है। वजाहत जी के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित बदलते मानव-जीवन की मीमांसा करने के पूर्व उनके जीवन-परिचय को प्रस्तुत करना औचित्यपूर्ण लगता है। अतः इस अध्याय में वजाहत जी के व्यक्तित्व के पहलुओं को तलाशना यहाँ आवश्यक हो जाता है।

---

1. नेमिचंद्र जैन - बदलते परिप्रेक्ष्य : सामयिकता की समस्या, पृ. 65
2. सं. अशोककुमार महेश्वरी - 'राधाकृष्ण प्रकाशन समाचार', अक्तूबर-2002, पृ. 4

1.1.1 जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान -

स्वातंत्र्योत्तर सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार असगर वजाहत का जन्म 5 जुलाई, 1946 में उत्तर-प्रदेश के फतेहपुर में रईस जमींदार परिवार में हुआ है। असगर जी के व्यक्तित्व विकास में परिवेश का अक्षुण्य महत्त्व है। उनके दादा खानदानी जमींदार होने के कारण सैकड़ों लोग अनेक समस्याएँ लेकर रोज उनसे मिलने आ जाते थे। असगर जी की इन सारी समस्याओं से बचपन में ही मुलाकात हो गई थी। इसलिए उनका साहित्य उनके अनुभव जगत् की अभिव्यक्ति ही है। उनकी सभी रचनाओं में समाज के वास्तव प्रश्नों का चित्रण मिलता है।

1.1.2 माता-पिता -

लेखक अपनी माँ को मुस्लिम रिवाज के अनुसार अम्माँ और पिताजी को अब्बा कहकर पुकारते थे। नोबेल पुरस्कार से विभूषित कथाकार जे. एम्. कोएट्जी अपने संस्मरण में लिखते हैं कि ''हर मनुष्य एक द्वीप होता है; जिसे अपने माता-पिता की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है।''[1] लेकिन ऐसा कहना बिलकुल एकांगी होगा क्योंकि हर संतान को अपने माँ-बाप के छत्रछाया की आवश्यकता होती ही है जिसमें पलकर वह जीवन-जगत् से रू-ब-रू परिचित होता है। असगर जी को भी ऐसा ही प्यारभरा छायाछत्र मिला था। उनकी माँ और पिताजी ने अपने बच्चों की परवरीश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेखक अपने पिताजी के संदर्भ में लिखते हैं- ''अब्बा बीमारी में हम लोगों का खास खयाल रखते थे। दवाएँ देना, खाना खिलाना, डॉक्टरों को बुलवाना और दीगर तीमारदारी करते न थकते थे।''[2] उपरोक्त उद्धरण के आधार पर कहना सही होगा कि असगर जी को कर्तव्यदक्ष, संतानप्रिय पितृ-छत्र मिला है जिनका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ा हुआ परिलक्षित होता है। असगर जी के जीवन पर उनकी माँ के संस्कारों का प्रभाव तो है ही इतना ही नहीं उन्होंने ही अपने बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। कहना सही होगा कि माँ के व्यवहारकुशल व्यक्तित्व ने ही असगर जी को एक किसान होने से बचाया है। इसी कर्तव्यनिष्ठा और व्यवहारकुशलता का ही फल है कि आज असगर जी हिंदी साहित्य के शीर्षस्थ साहित्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं। संक्षेप में असगर जी के व्यक्तित्व पर कर्तव्यदक्ष माता-पिता का प्रभाव है।

---

1. सं. रमेश चंद्र - 'नया ज्ञानोदय' मासिक पत्रिका, अंक-9, नवंबर- 2003, पृ. 13
2. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 41-42

1.1.3 बचपन -

असगर जी की घर की स्थिति अत्यंत संपन्न होने के कारण उनका बचपन लाड़-प्यार, खेल-कूद तथा अध्ययन में बीता है। उनके दादाजी अच्छे संस्कारशील व्यक्ति थे। वह अपने पोतों से बहुत प्यार करते थे और उनका खास खयाल रखते थे। लेखक स्वयं लिखते हैं- ''हम दोनों भाई जब करीब चार या पाँच साल के थे तो रोज सुबह उठकर मुँह-हाथ धोने और नाश्ता करने के बाद बाहर अब्बा मियाँ को आदाब करने जाते थे और हम दोनों को रोज एक-एक आना मिलता था।''[1] इससे स्पष्ट है कि असगर वजाहत जी का बचपन अभावग्रस्तता में नहीं बीता है। असगर जी अपने छोटे भाई से एक साल बड़े हैं फिर भी उन दोनों का नाम एक ही क्लास में लिखवाया था ताकि दोनों को डर न लगे। बचपन में उनके साथ उनके पिताजी के सादगीपूर्ण व्यवहार के बारे में लेखक का कथन दृष्टव्य है- ''अब्बा से हम लोग जब कोई फरमाइश करते थे तो कभी मना न करते थे। हम लोगों के लिए उनकी जुबान से कभी नहीं न निकलता था। जब हम छोटे थे तो हम दोनों भाई उनकी ऊँगली पकड़कर बाग तक जाते थे।''[2] उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि असगर जी का बचपन संपन्नता और खुशहाली में बीता है। बचपन में उनके मुंशी अब्बू साब उन्हें अपने जमाने के अनुभव के साथ-साथ अंग्रेजों के समय के किस्से सुनाते थे, जिससे लेखक प्रभावित होते थे। तात्पर्य यह कि असगर जी के बचपन में ही उनके अनुभवजगत् में वृद्धि होने लायक परिवेश मिला था।

1.1.4 परिवार -

अगर अपना परिवार कोई साहसी, ऐतिहासिक पार्श्वभूमि को साथ लेकर आया हो तो हर व्यक्ति को अपने परिवार और खानदान पर फक्र होता है। असगर जी के पुरखें सैयद इकरामुद्दीन 'खाफ' से अमजद हुमायूँ के साथ उनकी फौज में से हिंदुस्तान आए थे। इसलिए लेखक लिखते हैं- ''हमारे परिवार को अपने खानदानी और ईरानी नस्ल का होने पर बड़ा फक्र था।''[3] लेखक के दादाजी और नानाजी हर बार जमीन-जायदाद के कारण होनेवाले झगड़ों से

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 42
2. वही, पृ. 42
3. वही, पृ. 51

परेशान होकर अलग हो जाते हैं, जिससे उनका हरा-भरा संयुक्त परिवार टूट जाता है। दादाजी के गुजरने के बाद लेखक के पिताजी जमीन कसने में असफल हो जाते हैं। जमीन-जायदाद में भरोसा न होने के कारण लेखक और उनका छोटा भाई नौकरी के लिए बड़े शहरों में जाते हैं। तात्पर्य असगर जी का खानदानी संयुक्त परिवार विचार-भिन्नता और शहरीकरण के स्पर्श से हमेशा के लिए बिखर जाता है।

1.1.5 शिक्षा -

असगर जी के माँ और पिताजी की पढ़ाई बहुत कम होते हुए भी उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस्लाम धर्म में धार्मिक शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस्लाम धर्म में ''लड़का चार साल का होने के बाद 'बिसमिल्ला' नामक संस्कार होने के बाद उसकी शिक्षा प्रारंभ होती है।''[1] असगर जी की शिक्षा भी इस विधि के साथ ही शुरू हुई थी जिसके बारे में यह कथन दृष्टव्य है- ''एक मौलवी साहब आए और अब याद नहीं लेकिन कुछ दुआएँ वगैरा पढ़कर उन्होंने हम लोगों के हाथ में कलम दिया। हमारे हाथ को पकड़कर मौलवी साहब ने कलम दावात में डुबोकर 'बिस्मिल्लाह' लिखा। मिठाई और खाने-पीने का इंतिजाम था।''[2] उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि असगर जी की शिक्षा धर्म के नीति-नियमों के अनुसार ही शुरू हुई है। उन्होंने प्राथमिक और हायस्कूल शिक्षा पास होने के बाद उच्च-माध्यमिक शिक्षा से लेकर पीएच्. डी. तक की शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पोस्ट-डॉक्टोरल शोध की उच्च शिक्षा पूर्ण की है। स्वयं असगर जी अपने जीवन-वृत्त में लिखते हैं- ''एम्. ए., पीएच्. डी., अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (ए. एम्. यु.) भारत, पोस्ट-डॉक्टोरल शोध जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, (जे. एन्. यु.) नई दिल्ली - 1980-1983।''[3] असगर जी मेधावी तथा उच्च विद्याविभूषित छात्र रहे हैं और उनके खानदान में वह पहले आदमी हैं जिन्होंने इतनी उच्च शिक्षा ग्रहण की है। स्पष्ट है शिक्षा-ग्रहण के वक्त आए जीवनानुभवों और बदलती समाजनीतियों ने उनको एक सशक्त लेखक बना दिया है।

---

1. (सं.) महादेवशास्त्री जोशी - भारतीय सांस्कृतिक कोश, खंड - 7, पृ. 440
2. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 42
3. परिशिष्ट 1 से उद्धृत

1.1.6 नौकरी -

असगर जी ने एम्. ए. करने के बाद नौकरी की तलाश में अनेक धक्के खाए हैं। वे लिखते हैं- ''अकबर इलाहाबादी के अनुसार कभी पोस्ट ऑफिस में, पुलिस में, रेलवे में, जेल में, हर जगह हाथ-पैर मारे।''[1] अनेक प्रयत्नों के बाद उन्हें बंबई के एक अखबार में नौकरी मिलती है। स्पष्ट है असगर जी को शुरूआत में नौकरी बड़ी मुश्किल से मिली है। बाद में अखबार के लिए युरोप में विशेष संवाददाता के रूप में नौकरी की है। समाचार पत्रों में कार्यकारी संपादक तथा संपादक और 'हंस' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में लेखन तथा 'मुस्लिम विशेषांक' में अतिथि संपादक के रूप में कार्य किया है। ''विभिन्न साहित्यिक, राजनीतिक पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन के अतिरिक्त बी. बी. सी. लंदन के लिए लेखन।''[2] असगर जी ए. जे. के. किड़वाई जनसंपर्क शोध केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय के अध्यक्ष हैं- ''संप्रति- अध्यक्ष, ए. जे. के. किड़वाई जनसंपर्क शोध केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, (जे. एम्. आय.) नई दिल्ली।''[3] असगर जी लगभग तीन दशक से जामिया मिल्लिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं- ''संप्रति- 1971 से जामिया मिल्लिया इस्लामिया, केंद्रीय विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) के हिंदी विभाग में अध्यापन।''[4] ''उनके मार्गदर्शन में आठ छात्रों ने पीएच्. डी. उपाधि प्राप्त की है।''[5] आजकल वे ''यूरोपीय अध्ययन विभाग, ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय, बुदापेस्त (हंगेरी) में विजिटींग प्रोफेसर''[6] के रूप में कार्यरत हैं। निष्कर्षतः उच्च गुणवत्ताधारक असगर वजाहत जी ने प्राध्यापक, पत्रकार, संपादक, समीक्षक तथा मार्गदर्शक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई है। नौकरी के दरम्यान देश और विदेश की बदलती समाजनीतियाँ उनकी रचनाओं में स्पष्ट उभरकर आई हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

---

1. असगर वजाहत - सात आसमान, पृ. 194
2. वही, प्लेप से उद्धृत
3. परिशिष्ट 1 से उद्धृत
4. असगर वजाहत - सात आसमान, प्लेप से उद्धृत
5. परिशिष्ट 1 से उद्धृत
6. असगर वजाहत - सात आसमान, प्लेप से उद्धृत

1.1.7 नाटककार असगर वजाहत -

असगर वजाहत जी को सबसे बड़ी सफलता एक नाटककार के रूप में मिली है। भारत के कुछ जाने-माने नाटककारों में असगर जी का नाम शीर्षस्थ मानना होगा। एक अलग विषय को नाटक के द्वारा प्रस्तुत करनेवाले असगर जी के 'जिस लाहौर नहीं देख्या' नाटक ने भारतीय नाट्य-क्षेत्र में नया मानक स्थापित किया है। उस नाटक के बारे में लिखा है- ''भारत विभाजन जैसी त्रासदी पर हिंदी, उर्दू, पंजाबी सभी भाषाओं में एक-से-एक मार्मिक कहानियाँ लिखी गई लेकिन नाटक की दुनिया में आज भी असगर वजाहत के नाटक 'जिस लाहौर नहीं देख्या' को छोड़कर कोई दूसरी रचना हमारे सामने नहीं है।''[1] असगर जी ने इस नाटक के द्वारा देश-विदेश में सांप्रदायिक दंगे और उसके दुष्परिणाम जैसे ज्वलंत प्रश्न को समाज के सामने उजागर किया है। असगर जी नुक्कड़ नाटकों के प्रणेते माने जाते हैं। उनके नुक्कड़ नाटक भारतीय सभी भाषाओं में मंचित किए गए हैं। विशेष रूप से ''उनका नुक्कड़ नाटक 'सबसे सस्ता गोश्त' निशांत ग्रुप (दिल्ली) द्वारा सैकड़ों बार मंचित किया गया है। इसके अतिरिक्त उनके एक अन्य नुक्कड़ नाटक 'सरकारी सांड़' को 'निशांत' ने एक हजार से अधिक बार खेला है।''[2] नुक्कड़ नाटकों के साथ-साथ उनके पूर्णकालिक नाटक संपूर्ण भारत में रंचमंच पर प्रस्तुत हुए हैं। ''उनके नाटक रंगमंच पर लानेवालों में हबीब तन्वीर, एम्. के. राइना, कविता नागपाल और अनिल चौधरी आदि दिग्गज दिग्दर्शकों का समावेश होता है।''[3] हिंदी नाट्य परंपरा में नाटक की रंगमंच प्रस्तुति में असगर जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। डॉ. वामन केंद्रे कहते हैं- ''मोहन राकेश, शंकर शेष, सुरेंद्र वर्मा, शरद जोशी, धर्मवीर भारती की पंक्ति का कोई नाटककार आज हिंदी थिएटर के पास नहीं है। असगर वजाहत अपवाद है।''[4] असगर जी को जिस नाटक ने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया वह ''जिस लाहौर....' नामक नाटक 1991 में खालिद अहमद द्वारा पाकिस्तान (कराची) तथा 1992 में उमेश अग्निहोत्री द्वारा अमरीका के वॉशिंग्टन शहर में प्रस्तुत हुआ है। इस नाटक पर मशहूर फिल्म

---

1. सं. आनंद दीक्षित - सहारा समय, 16 अगस्त, 2003, पृ. 21
2. असगर वजाहत - सबसे सस्ता गोश्त (नुक्कड़ नाटक संग्रह), प्लेप से उद्धृत
3. परिशिष्ट 1 से उद्धृत
4. सं. आनंद दीक्षित - सहारा समय, 6 दिसंबर, 2003, पृ. 13

निर्माता गोविंद निहलानी फिल्म बना रहे हैं।''[1] संक्षेप में कहना सही होगा कि समाज के ज्वलंत प्रश्नों को नाटक के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत करनेवाले असगर वजाहत जी हिंदी नाट्य क्षेत्र के मिल के पत्थर हैं।

1.1.8 दूरदर्शन धारावाहिक तथा पटकथा लेखक -

असगर वजाहत जी ने वृत्तचित्र, धारावाहिक और कुछ फिचर फिल्मों के लिए पटकथा लेखन में विशेष योगदान किया है। लेखन के साथ-साथ दिग्दर्शन में भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने ''1986 में 'उर्दू गझल का प्रवाह' विषय पर बीस मिनट तक का 16 एम्. एम्. रंगीन वृत्तचित्र का दिग्दर्शन किया है।''[2] इसके साथ-साथ 1989 में सरदार भगत पुरानसिंह जो सामाजिक, पर्यावरणवादी कार्यकर्ता थे तथा शंकर गुहा नेयोगी जो मध्यप्रदेश में हुए कामगार आंदोलन के प्रमुख नेता थे। उन दोनों चरित्रों पर वृत्तचित्र लिखा था जो आकाशवाणी पर 1991 में प्रसारित हुआ था। दूरदर्शन के लिए धारावाहिक लेखन तथा दिग्दर्शन में भी उनकी रुचि दृष्टिगोचर होती है। ''उन्होंने दिग्दर्शित 13 भागों का दूरदर्शन धारावाहिक 'बूँद-बूँद' 1990 में दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था।''[3] साथ-साथ ''इ. स. 2003 में दूरदर्शन पर प्रसारित चरित्र 'खोया बचपन' के लिए उन्होंने दिग्दर्शन किया था।''[4] स्पष्ट है कि उनका सारा लेखन और दिग्दर्शन समाज-सुधार की दृष्टि से निहित दृष्टिगोचर होता है। धारावाहिक के साथ फिल्मों के लिए उन्होंने पटकथा लेखन भी किया है। उनके जीवनवृत्त में लिखा है- ''उन्होंने 1980 में 'आगमन' फिल्म के लिए संवाद लिखे थे। वे अब तीन फिल्म की पटकथा लिखने में व्यस्त हैं जो गोविंद निहलानी दिग्दर्शित करनेवाले हैं। वे दूरदर्शन के 'सपने अपने-अपने' धारावाहिक लिखने में भी व्यस्त हैं।''[5] निष्कर्षतः कहना सही होगा कि साहित्यकार होने के साथ-साथ असगर वजाहत जी ने दूरदर्शन और फिल्मों के माध्यम से जन-जागृति का अभियान चलाया है, जिसके द्वारा देश के कोने-काने में परिवर्तन की लहर आने की संभावना है।

---

1. परिशिष्ट 1 से उद्धृत
2. वही
3. वही
4. वही
5. वही

1.1.9 सामाजिक कार्यकर्ता -

असगर जी के हर साहित्य में उनकी अपार संवेदनशीलता परिलक्षित होती है। अण्णा भाऊ साठे के अनुसार "शब्दों को आकार देना आसान है, किंतु उन शब्दों को आत्मा देना उतना आसान नहीं है।"[1] स्पष्ट है कि शब्दों में आत्मा तभी आएगी जब समाज की संवेदनशीलता, समस्याएँ उन शब्दों को झकझोरकर रख देगी। अनेक समाजोपयोगी कार्यों के कारण असगर जी के साहित्य के शब्दों में आत्मा का आभास मिलता है। असगर जी सिंगारी नामक गाँव के आदिवासियों का महाजन द्वारा होनेवाला शोषण एक परियोजना के माध्यम से समाज के सामने उजागर कर रहे हैं। "असगर वजाहत इस गाँव में संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था एफ. ए. ओ. और राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त रूप से एक विकास परियोजना चला रहे हैं।"[2] उपरोक्त उद्धरण से विदित होता है कि असगर वजाहत जी में समाज भावना निहित है। उनका प्रौढ़ शिक्षा के लिए नुक्कड़ नाटक तथा चरित्र फिल्मों के लेखन में महत्त्वपूर्ण सहभाग रहा है। उन्होंने आदिवासी समाजहित, जातीय संघर्ष आदि संवेदनशील कार्यों में विशेष योगदान दिया है। समाज की प्रगति में शिक्षा के महत्त्व को जानकर उन्होंने "रिसोर्स सेंटर दिल्ली के सहयोग से एक रिक्षा-चालकों में शिक्षा प्रसार होने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया है।"[3] स्पष्ट है कि असगर जी ने सर्व शिक्षा अभियान को चालना देने का प्रयास किया है। "इ. स. 1991 में हुई 'एशियन अण्ड साऊथ पॅसिफिक ब्युरो ऑफ अडल्ट एज्युकेशन' की सभा में प्रतिनिधित्व किया जो तगयातई, फिलीपाईन्स में हुई थी।"[4] निष्कर्षतः असगर वजाहत जी समाज-विकास के हितैषी हैं। उनके अनेक समितियों पर कार्य करने के अवसर उनके सामाजिक हित की भावना का ही प्रतिफल है।

1.1.10 चित्रकार असगर वजाहत -

सुविख्यात साहित्यकार असगर वजाहत उन साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने साहित्य के साथ-साथ चित्रकला की भी सेवा की है। भारत के अलावा विदेशों में भी उनकी चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई हैं जिसमें उनके कलात्मक चित्रों ने अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके

---

1. सं. अर्जुन डांगळे, नीला उपाध्ये, वसुंधरा पेंडसे, सुभाष सावरकर- समग्र अण्णा भाऊ साठे, पृ.1178
2. सं. कन्हैयालाल नंदन - 'सारिका' पाक्षिक, अंक- 290, वर्ष- 21 अगस्त, 1981, पृ. 61
3. परिशिष्ट 1 से उद्धृत
4. वही

जीवनवृत्त में लिखा है- ''भारत के अलावा बुदापैस्त हंगेरी में दो एकल चित्र प्रदर्शनियां।''[1] इससे स्पष्ट है कि असगर जी का चित्रकार के रूप में एक अनोखा व्यक्तित्व हमारे सामने उभरता है, जो अन्य साहित्यकारों में दुर्लभ है।

1.1.11 जनसंपर्क माध्यम और असगर वजाहत -

असगर जी साहित्य और समाज में जनसंपर्क माध्यमों की आवश्यकता और विकास पर जोर देते हुए परिलक्षित होते हैं। इसी प्रेरणा से वे जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के ए. जे. के. किड़वाई जनसंपर्क शोध केंद्र के अध्यक्ष के रूप में सुचारू ढंग से कार्य कर रहे हैं। जनसंपर्क क्षेत्र में शोध के साथ-साथ प्रगति और प्रसार के लिए उन्होंने अनेक जगह अपने विचार प्रकट किए हैं। सूरीनाम में संपन्न सातवें विश्व हिंदी संमेलन में भी उनके ''हिंदी के विकास में जनसंचार माध्यमों का योगदान''[2] तथा ''हिंदी के विकास में रेडियो, टिलीविजन, फिल्मों, नाटक आदि जन-माध्यमों का योगदान''[3] आदि विषय रहे हैं। उन्होंने विश्व हिंदी संमेलन में विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे जनसंपर्क शोध केंद्रों को मीड़िया से जोड़ने की आवश्यकता की भी पहल की है।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

असगर वजाहत जी के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के पक्ष पर यहाँ संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है-

1.2.1 प्रतिभासंपन्न -

असगर वजाहत ने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक, बौद्धिक और मानसिक रूढ़िबद्ध घेरों को तोड़ने का काम किया है। अद्भूत प्रतिभा, जबरदस्त कड़ी मेहनत और लगन से आज असगर जी का नाम सभी क्षेत्र और सभी जगह चर्चा में है। वे एक सशक्त लेखक, नाट्य दिग्दर्शक, फिल्म पटकथा लेखक, समाजिक कार्यकर्ता, आलोचक, मार्गदर्शक और अच्छे वक्ता हैं।

---

1. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस' मासिक पत्रिका, अप्रैल, 2002, पृ. 19
2. सं. डॉ. अशोक चक्रधर - संमेलन समाचार समग्र, पारामारिबो, सूरीनाम, सातवाँ विश्व हिंदी संमेलन, 5 - 9 जून, 2003, पृ. 46
3. वही, पृ. 46

उन सब के मूल में उनकी प्रतिभा निहित है। निष्कर्षतः कहना सही होगा कि असगर वजाहत जी एक प्रतिभासंपन्न रचनाकार हैं।

1.2.2 आधुनिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण -

असगर जी ऐतिहासिक साहित्यकार होने के कारण उन्होंने कभी आधुनिकता का विरोध नहीं किया बल्कि आधुनिकता को बढ़ावा ही दिया हुआ परिलक्षित होता है। खासकर हिंदी के विकास के लिए जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता के बारे में उन्होंने उठाए गए कदम क्रांतिकारी माने जाने चाहिए। सातवें विश्व हिंदी संमेलन, सूरीनाम में अपने बीज व्याख्यान में उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि ''हम जनसंचार माध्यमों के द्वारा हिंदी के विकास की बात तो कर रहे हैं पर क्या इसके स्वरूप और विश्वविद्यालयों में फिल्म, टेलीविजन पाठ्यक्रम तथा उद्घोषकों की आवश्यकताओं पर शोध-कार्य अथवा सर्वेक्षण किए गए हैं।''[1] उपरोक्त कथन से विदित होता है कि असगर जी हिंदी की बनी-बनाई लीग को छोड़कर उसे आधुनिक, वैज्ञानिक रूप देना चाहते हैं, ताकि हिंदी का विकास हो जाए। उन्होंने शोध-क्षेत्र, तकनीति, मीड़िया, अनुवाद तथा पत्रकारिता आदि अलग-अलग क्षेत्रों में कार्यक्रम बनाकर उसके सुधार पर विशेष जोर दिया है। अतः कहना सही होगा कि असगर जी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के और आधुनिकता प्रेमी रचनाकार हैं।

1.2.3 युवाओं के प्रेरणास्रोत -

असगर जी की दृष्टि नई युवा पीढ़ी के बारे में हमेशा सतर्क दिखाई देती है। अपने साहित्य और गतिविधियों के माध्यम से आज के युवा पीढ़ी को भविष्य की चुनौतियों से परिचित कराने का उनका सदैव प्रयास रहा है। उनका मानना है कि ''आज का युवा पिछले दशकों की युवा पीढ़ियों से बहुत भिन्न है। क्योंकि उसके सामने अस्तित्व को बनाए रखने का संकट ही नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धा की दौड़ भी है।''[2] कहना सही होगा कि असगर जी ने आज की युवा पीढ़ी को सही मायने में समझने का प्रयास किया है।

---

1. सं. डॉ. अशोक चक्रधर - संमेलन समाचार समग्र, सातवाँ विश्व हिंदी संमेलन पारामारिबो, सूरीनाम, 5 - 9 जून, 2003, पृ. 87
2. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस', मासिक पत्रिका, फरवरी, 2001, पृ. 94

सचमुच आज का युवा जिस दौर से गुजर रहा है वह निश्चित ही कठिन समय है। इस युवा में प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में सिर्फ सबसे आगे जाने की लालसा परिलक्षित होती है। परिणामस्वरूप इस खंत का जन्म हो रहा है कि वह अपने परिवार, समाज, अपना देश, धर्म सभी को भूलने लगा है। इस स्पर्धा की दौड़ में जो जीत जाता है उसके पीछे श्रम की मजबूत आधारशिला होती है, किंतु जो हार जाता है वह नाउम्मीद होता है। असगर जी इस हार को नापसंद करते हुए युवाओं को संदेश देते हैं कि ''इक्कीसवीं सदी में असफलता सबसे बुरा शब्द होगा जिसे कोई भी स्वीकार नहीं करेगा।''[1] उपरोक्त उद्धरण के आधार पर कहना सही होगा कि असगर जी युवाओं के मन में सफलता की प्रेरणा के बीज बो कर उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहयोग दे रहे हैं। उनके इस दृष्टिकोण से नई युवा पीढ़ी हमेशा प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

1.2.4 देशप्रेमी -

असगर जी को अपने देश के आज़ाद लोकतंत्र पर गर्व है। साथ ही अरबी, ईरानी, ईराकी मुसलमान न होकर भारतीय मुसलमान होने का बड़ा फक्र महसूस करते हुए वह स्वयं लिखते हैं- ''मैं अक्सर ईश्वर, अल्लाह, प्रभू, ईशु को धन्यवाद देता हूँ कि मैं भारतीय मुसलमान हूँ। जरा कल्पना कीजिए कि यदि मैं अरबी, ईराकी, ईरानी मुसलमान होता तो क्या होता ? क्या आदमी की सबसे बड़ी आवश्यकता आज़ादी वहाँ इतनी होती ?''[2] उपरोक्त उद्धरण से असगर जी अपने देशभूमि के प्रति कृतज्ञ होते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। उन्हें अपने देश से बेहद प्रेम है।

1.2.5 सांप्रदायिक एकता के हिमायती -

असगर जी संवेदनशील लेखक हैं। उन्होंने अनेक जातिगत हिंसाओं का प्रत्यक्ष अनुभव लिया हुआ परिलक्षित होता है। इसलिए सांप्रदायिक हिंसाओं के दर्द को उन्होंने अपने साहित्य, नाटक आदि के माध्यम से सदैव वाणी देने का प्रयास किया है। सांप्रदायिक हिंसाओं के दुष्परिणामों से भलीभाँति परिचित होने के कारण वह हमेशा सांप्रदायिक एकता के हिमायती रहे हैं। आज समाज में हिंदू-मुसलमानों के बीच अविश्वास, घृणा, द्वेष और हिंसा का माहौल है जिसकी परिणती सांप्रदायिक हिंसाओं में होती है, जिसके दुष्परिणाम सारे देश को भुगतने पड़ते हैं। असगर

---

1. सं. राजेंद्र यादव - 'हंस', मासिक पत्रिका, फरवरी, 2001, पृ. 95
2. वही, अगस्त, 2003, पृ. 6

वजाहत जी स्वयं कहते हैं- ''जब-जब सांप्रदायिक घृणा और हिंसा फैलती है, तब-तब देश और देशवासियों को हर तरह का नुकसान होता है। इसलिए सांप्रदायिकता को समाप्त करना केवल किसी संप्रदाय विशेष के लिए ही नहीं है, बल्कि देश की एकता, अखंड़ता, समृद्धि के लिए भी अत्यंत जरूरी है।''[1] उपरोक्त उद्धरण से असगर जी ने सांप्रदायिक विद्वेष के परिणामों से परिचित कराते हुए सांप्रदायिक एकता की महत्ता को बताया है।

असगर जी हिंदू-मुस्लिम विद्वेष के मूल में राजनीति मानते हैं। उनका मानना है कि स्वतंत्रता के पचास साल में कोई ऐसा एक भी राष्ट्रीय पक्ष नहीं बन सका, जिसने हिंदू-मुस्लिम दोनों को साथ आने की प्रेरणा दी। पाकिस्तान के साथ बढ़ती शत्रुता के कारण सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिल रहा है। आज हर राजनीतिक पक्ष ने धर्म के आधार पर वोट लेने की राजनीति अपनाई है। कुछ धर्मांध शक्तियों ने जनसंचार के माध्यमों द्वारा लोगों में आपस में घृणा, द्वेष, हिंसा का व्यापक प्रचार शुरू किया है, जो आम जन-मानस को बड़ी हद तक सांप्रदायिक बना रहा है। चुनावी कूटनीती के तहत् कुछ मुखौटावादी राजनयिक सांप्रदायिक दंगों को बढ़ावा देते हैं जिनपर कठोर शब्दों में टीका करते हुए असगर वजाहत लिखते हैं- ''दंगों का लाभ निश्चय ही सांप्रदायिक दलों का होता है। धर्म के आधार पर भावनाओं को भड़काकर सांप्रदायिक दल चुनाव जीतते हैं और अपना शासन स्थापित करते हैं। रोचक यह है कि सांप्रदायिक उन्माद फैलाकर दंगा कराने और देश पर करोड़ों रुपए का बोझ डालनेवाले, देशवासियों में फूट और घृणा का जहर फैलानेवालों ने देशभक्त होने का चोला पहन रखा है।''[2] उपरोक्त कथन से विदित होता है कि असगर जी को जहाँ-जहाँ मौका मिला है, वहाँ सांप्रदायिकता का कठोरता के साथ विरोध किया है। सांप्रदायिकता विरोधी प्रवृत्ति उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू है और प्रसंशनीय भी।

1.2.6 मुस्लिमों के व्यथाकार -

असगर जी ने अपने साहित्य और अन्य मंच पर मुस्लिमों की अच्छाई-बुराइयाँ, समस्याओं और संवेदनाओं को निष्पक्षता के साथ प्रकट करने का प्रयास किया है। देश में अल्पसंख्यक मुस्लिम वर्ग के विरोध में घृणा का माहौल तथा अनेक भ्रम फैल गए हैं। सांप्रदायिक

---

1. सं. राजेंद्र यादव, अतिथी संपादक असगर वजाहत - 'हंस' मुस्लिम विशेषांक, अगस्त, 2003, पृ. 5
2. वही, पृ. 6

शक्तियाँ ऐसे ही कुछ बातों का आधार लेकर समाज में हिंसाएँ फैलाने का कार्य करते हैं जिससे सबसे ज्यादा मुसलमान प्रभावित होते हैं। गुजरात में हुए सांप्रदायिक दंगे का आधार लेकर असगर जी कहते हैं- ''प्राप्त आकड़े और अध्ययन बताते हैं कि सांप्रदायिक दंगों में जानमाल का सबसे अधिक नुकसान मुसलमानों का होता है।''[1] उपरोक्त उद्धरण से असगर जी ने मुस्लिमों पर हो रहे अन्याय, अत्याचार को दर्शाते हुए मुस्लिमों की व्यथा पर प्रकाश डाला है।

जिन्होंने समाज में आतंक फैलाया है या राजनीति में अपने स्वार्थ के लिए सांप्रदायिक हिंसाएँ चलाई हैं, उन सब की असगर जी ने कटु शब्दों में आलोचना की है। इसमें वे हिंदू दलों के साथ-साथ मुस्लिम धर्मांध पक्ष और राजनयिकों को भी नहीं बख्शते हैं। उनका मानना है कि हिंदुत्व के एजंडे को अनेक दलों ने अपना शस्त्र बनाया है। ''हिंदुत्व तथा सांप्रदायिक घृणा और हिंसा के कारण ही आज वे सत्ता में बैठे हैं। सत्ता प्राप्त करने का इससे सरल नुस्खा क्या हो सकता है ? यही तो मुस्लिम लीग और मोहम्मद अली जिन्ना ने किया था।''[2] उपरोक्त उद्धरण के आधार पर निष्कर्षतः कहना सही होगा कि असगर जी न हिंदुओं के विरोधी हैं और न मुस्लिमों के समर्थक, वे आम मुस्लिम के व्यथाकार हैं।

1.3 वाङ्मय अर्थात् असगर वजाहत की साहित्य-यात्रा -

वाङ्मय मनुष्य को मिली हुई अनोखी देन है। सृष्टि के अनेक सुखों में से वाङ्मय का सुख अप्रतिम माना जाता है। इस वाङ्मय की कसौटि को नापते हुए साहित्याचार्य नरसिंह चिंतामण केळकर लिखते हैं- ''सच्ची सविकल्प समाधी उत्पन्न कर सकता है वही वाङ्मय है।''[3] अतः कहना सही होगा कि इसके निर्माण में सच्चे तपस्वियों की आवश्यकता होती है। असगर जी के कृतित्व को देखने के बाद कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि वे उन तपस्वियों में से एक हैं जिन्होंने हर क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है। उनके साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं एवं संघर्षों का चित्रण विशेष रूप से उभर आया है। मानव के बाह्य जगत् के साथ-साथ सुख-दुःख आदि व्यक्तिमन के अंतर्गत चित्रण को भी उन्होंने अपने

---

1. सं. राजेंद्र यादव, अतिथि संपादक असगर वजाहत - 'हंस' मुस्लिम विशेषांक, अगस्त, 2003, पृ. 5
2. वही, पृ. 5
3. रा. श्री. जोग - प्रदक्षिणा, पृ. 264

साहित्य में व्यापक परिवेश प्रदान किया है। जयशंकर प्रसाद ने एक जग्ह पर साहित्य की इसी परिभाषा को दोहराते हुए कहा है कि ''दुःख दग्ध जगत् और आनंदपूर्ण स्वर्ग, दोनों के एकीकरण का यत्न ही साहित्य है।''[1] तात्पर्य असगर जी ने मानव जीवन को उसके संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा की है। यहाँ पर असगर वजाहत की आज तक की साहित्य यात्रा में उनके द्वारा लिखी गई रचनाएँ प्रस्तुत हैं-

1.3.1 हिंदी उपन्यास-साहित्य -

1.	सात आसमान	राजकमल प्रकाशन	1996.
2.	रात में जागनेवाले	-	-
3.	पहर दोपहर	-	-

1.3.2. कहानी-संग्रह -

1.	अंधेरे से	भाषा प्रकाशन	1972
2.	दिल्ली पहूँचना है	प्रकाशन संस्थान	1981
3.	स्विमिंग पूल	राजकमल प्रकाशन	1990
4.	सब कहाँ कुछ	किताबघर	1991
5.	आधी बानी	प्रविण प्रकाशन	2001

1.3.3 नाटक-साहित्य -

1.3.3.1 पूर्णकालिक नाटक -

1.	फिरंगी लौट आए	-	-
2.	इन्ना की आवाज	प्रकाशन संस्थान	1986
3.	वीरगति	वाणी प्रकाशन	1988
4.	समिधा	-	-
5.	जिस लाहौर नई देख्या....	-	-
6.	ओ जन्म्या ही नई	दिनमान प्रकाशन	1991
7.	अकी	रत्नकेतन प्रकाशन	2002

---

1. सं. कन्हैयालाल नंदन - 'गगनांचल' त्रैमासिक पत्रिका, जुलाई-सितंबर, 1998, अंक- 3, पृ. 71

1.3.3.2 नुक्कड़ नाटक-संग्रह -

1. सबसे सस्ता गोश्त	गगन भारती प्रकाशन	1990

1.3.3.3 नुक्कड़ नाटक

1. सरकारी सांड	-	-

1.3.3.4 किताब -

1. पाँच नाटक	प्राची प्रकाशन	1995

1.3.4 आलोचना पुस्तक -

1. हिंदी कहानी : पुनर्मूल्यांकन	भाषा प्रकाशन	1979
2. हिंदी उर्दू की प्रगतिशील कविता	मैकमिलन इंडिया लि.	1981

1.3.5 फिल्म - दूरदर्शन लेखन -

1.3.5.1 दूरदर्शन -

1.3.5.1.1 वृत्त-चित्र -

1. गझल की कहानी
2. खोया बचपन
3. सरदार भगत पुराणसिंग
4. शंकर गुहा नेयोगी

1.3.5.1.2 धारावाहिक लेखन -

1. बूंद-बूंद	राधाकृष्ण प्रकाशन	1990
2. सपने अपने-अपने	-	-

1.3.5.2 फिल्म -

1. आगमन (1980) - संवाद लेखन
   तीन फिल्मों की पटकथा मार्गस्थ

1.3.6 अनुवाद कार्य -

1. आखिरेशब के हमसफर, लेखक - करर्तुल ऐन हैदर,	ज्ञानपीठ प्रकाशन।
2. सिनेमा के बारे में, लेखक - जावेद अख्तर / नसरीन मुन्नी कबीर।	राधाकृष्ण प्रकाशन।

1.3.7 ***समीक्षा*** -

1. किल-ए-मोहल्ला की झलकियाँ, लेखक - अर्श तैमूरी — उर्दू अकादमी।
2. बज्मे आखिर, लेखक - मुंशी फैजउद्दीन — उर्दू अकादमी।
3. दिल्ली का आखिरी दीदार,
   लेखक- सैयद बजीर हसन् देहलवी — उर्दू अकादमी।
4. लालकिले की एक सलद, लेखक - हकीम खाजा सैयद — उर्दू अकादमी।

1.3.8 ***पुरस्कार एवं सम्मान*** -

1. संस्कृति सम्मान - संस्कृति प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा — 1978
2. सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार — 1992
   सोसायटी फॉर अंडरस्टैंडींग एंड फ्रेटर्निटी द्वारा
3. हिंदी-उर्दू एवार्ड कमेटी,लखनऊ द्वारा सम्मानित — 1992
4. उत्कृष्ठ नाट्य लेखक पुरस्कार - भुवनेश्वर नाट्य संस्थान — 1995
5. वनमाली पुरस्कार - भोपाल द्वारा — 2000
6. साहित्यकार सम्मान - हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा

विभूषित पद -

1. अध्यक्ष - जनवादी लेखक संघ, दिल्ली.
2. अध्यक्ष - कार्यकारिणी मंडल, मैत्रेयी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.
3. सदस्य - कार्यकारिणी मंडल, हिंदी अकादमी, दिल्ली, 1990-1992.
4. सदस्य - जनसंपर्क शोध केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली.
5. सदस्य - अभ्यास मंडल, उर्दू विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली.
6. सदस्य - अभ्यास मंडल, अंग्रेजी तथा आधुनिक पाश्चात्य अभ्यास,
   जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली.
7. सदस्य - अभ्यास मंडल, मानव्यशास्त्र स्कूल,
   इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.
8. सदस्य - अभ्यास मंडल, हिंदी विभाग, कुमांव विश्वविद्यालय, नैनीताल.
9. सदस्य - अभ्यास मंडल, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़.

1.3.9 यात्राएँ -

अमरीका, ब्रिटन, फिलिपाइन्स, हाँगकाँग, ऑस्ट्रियॉ, फ्रेंच प्रजासत्ताक, जर्मनी, फ्रान्स, नेदरलॅड़स, इटली और रूमानिया।

निष्कर्ष -

असगर वजाहत के अंतर्बाह्य व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विवेचन और विश्लेषण के उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं-

1. असगर जी का व्यक्तित्व संवेदनशील, कलाप्रेमी, परंपरा और आधुनिकता का समन्वयक, अध्ययनशील, हिंदीप्रेमी, सांप्रदायिक एकता का हिमायती, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और निस्वार्थ समाज-सुधार की भावना से ओत-प्रोत दृष्टिगोचर होता है।
2. असगर जी का बचपन बहुत लाड़-प्यार में बीता है। अनेक लोगों के संपर्क के कारण बचपन से ही समाज के बनते-बिगड़ते नियमों एवं मूल्यों से उनका अनुभवजगत् वृद्धिंगत हुआ है।
3. आदिवासी आदि क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य से उनके उक्ति और कृति में समानता दिखाई देती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। मानवता और मानवतावाद का समर्थन उनकी स्वभावगत विशेषता है।
4. फिल्म, नाट्य और साहित्य के माध्यम से उन्होंने सबसे ज्यादा सांप्रदायिक सद्भाव का समर्थन किया है। असगर जी हिंदू-मुस्लिम एकता के सच्चे समर्थक हैं।
5. सांप्रदायिक और सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ उन्होंने धर्मांध राजनीति पर भी अपनी तीखी लेखनी चलाई हुई परिलक्षित होती है।
6. असगर जी के लेखन क्षेत्र की परिधि विशाल नजर आती है। उन्होंने अनेक भाषाओं और अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनकी रचनाएँ कल्पनारहित यथार्थवादी दृष्टिगोचर होती हैं।
7. देश-विदेश के विभिन्न मानव-जीवन से परिचित होने के कारण उनके अनुभवविश्व की परिधि में वृद्धि हुई है।
8. समाज के ज्वलंत प्रश्नों का चित्रण ही उनके कृतित्व का प्रमुख प्रतिपाद्य होने के कारण उन्हें अनेक सामाजिक संस्थाओं ने पुरस्कारों से गौरवान्वित किया है।
9. संक्षेप में कहना सही होगा कि असगर वजाहत जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। उनका व्यक्तित्व मानव समाज के लिए प्रेरक एवं आदर्श प्रतीत होता है तथा कृतित्व मानव को गलत रास्ते से हठाकर सही दिशानिर्देश करनेवाला दृष्टिगोचर होता है।